



प्रवेशांक



आशा पारस बहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित
(PEER- REVIEWED) शोध-पत्रिका

खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025

प्रधान संपादक
प्रो. आशा शुक्ला
संपादक
प्रो. आर.के.शुक्ला

अंक संपादक
डॉ. सुरेन्द्र पाठक
अंक सह-संपादक
डॉ. सुनील छानवाल

उप-संपादक
डॉ. रामशंकर
डॉ. अजय दुबे

प्रबंध संपादक
लव चावड़ीकर

प्रकाशक
आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी
फाउंडेशन, भारत

A93, एमराल्ड पार्क सिटी, एम्स अस्पताल के पास, बागसेवनीया,
भोपाल-462026, मध्य प्रदेश
officeparasfoundation@gmail.com
www.ashaparasfoundation.com



संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

प्रो. आशा शुक्ला

प्रबंध निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व कुलगुरु, डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महु इंदौर, मध्य प्रदेश

ashashukla2006@yahoo.co.in

+91 9926310987

संपादक

प्रो. आर. के. शुक्ला

निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग, पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश

dr_ravindrashukla@rediffmail.com

+91 9977466514

अंक संपादक

डॉ. सुरेन्द्र पाठक

प्रोफेसर, लोक जागृति विश्वविद्यालय,

अहमदाबाद, गुजरात

pathak06@gmail.com @gmail.com

+91 8527630124

अंक सह संपादक

डॉ. सुनील छानवाल

निदेशक प्रभारी, दर्शन एवं थियोलॉजिकल स्टडीज़ स्कूल, एल.जे.

विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात

sunilchhanwal@gmail.com

+91 9825564968

संपादक मण्डल सदस्य

प्रो. कुसुम कुमारी

पूर्व प्रति-कुलपति, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार

kusumdewmu@rediffmail.com

+91 7542026364

प्रो. अंजली अवधिया

प्राध्यापक (भौतिकी) एवं सन्युक्त संचालक, रूसा, उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़

anjalioudhia@gmail.com

+91 9826733747

कुसुम त्रिपाठी

पूर्व प्राध्यापक एवं नारीवादी चिंतक, ठाणे मुंबई, महाराष्ट्र

kusumtripathi1801@gmail.com

+91 9323149864

डॉ. भरत भाटी

सह प्राध्यापक, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग, सेज विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश

bbhati24@gmail.com

+91 7247579402

प्रो. मनोज कुमार सक्सेना

विभागाध्यक्ष एवं डीन (शिक्षा), हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

drmanojksaxena@gmail.com

+91 9805015599

डॉ. हिमानी उपाध्याय

पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, हवाबाग महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

himaninayagaon@gmail.com

+91 9425151510

डॉ. जया फूकन

फैकल्टी, महिला अध्ययन विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश

jayaphookan2017@gmail.com

+91 9826751736

डॉ. बिंदिया तातेर

सह प्राध्यापक, मेडि-केप्स विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश

bindiya.tater@gmail.com

+91 9610958099

प्रो. सीमा धवन

प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखंड

seemahnbedu@gmail.com

+91 9411110597

डॉ. भारती शुक्ला

प्राध्यापक, हवाबाग महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

bhartivts@gmail.com

+91 9407851719

डॉ. अमरजीत सिंह

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखंड

pariharsingh73@gmail.com

+91 9410854330

डॉ. वंदना गुप्ता

सहायक प्राध्यापक, इतिहास, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, उत्तरप्रदेश

vandanahistory1@gmail.com

+91 8858161917

उप संपादक

डॉ. रामशंकर

सहायक प्राध्यापक, आई.आई.एम.टी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

ramwardha1986@gmail.com

+91 9890631370

डॉ. अजय दुबे

पूर्व प्राचार्य, स्वामी राम हिमालयन योग विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड

ajaydubeyyoga@gmail.com

+91 8319936738

प्रबंध संपादक

लव चावड़ीकर

कार्यकारी प्रबंधक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत

officeparasfoundation@gmail.com

+91 9893950833

नोट:- व्यक्तिगत लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं और जरूरी नहीं कि वे आशा पारस बहुविषयक भारतीय शोध पत्रिका/संपादक मण्डल को प्रतिबिंबित करते हों।

विषय सूची

क्रम	विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक
	संपादकीय प्रो. आशा शुक्ला	3-4
1	विकास का सह-अस्तित्ववादी सिद्धांत अंजली अवधिया	5-15
2	शिक्षा का मानवीय रूपांतरण: मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन अर्पिता शर्मा एवं सुरेन्द्र पाठक	16-33
3	कोशिका में व्यवस्थित क्रियात्मकता और संतुलन: सह-अस्तित्ववाद (मध्यस्थ दर्शन) की दृष्टि से मूल्यांकन अर्चना सेंगर	34-44
4	मध्यस्थ दर्शन के सह-अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से पारिवारिक जीवन: एक समाधानकारी दृष्टि बंसी चंदाराना एवं सुनील छानवाल	45-53
5	मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद और परिवार मूलक ग्राम व्यवस्था: समरस ग्रामीण जीवन की अवधारणा देव प्रकाश शर्मा	54-64
6	मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था गौरीकान्ता साहू	65-75
7	मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्व पर आधारित समरस जीवन की संकल्पना जनक जे. शाह	76-83
8	जीवन और मेधस-शरीर का संबंध: मध्यस्थ दर्शन का दृष्टिकोण साधन भट्टाचार्य	84-92
9	मानव जीने के आयामों में सहअस्तित्ववादी शिक्षा की भूमिका: एक दार्शनिक विवेचना सोनिका एवं सुरेन्द्र पाठक	93-101
10	मध्यस्थ दर्शन के परिप्रेक्ष्य में परिवार, समाज और सह-अस्तित्व की नैतिकता: एक समसामयिक विश्लेषण सुरेन्द्र जगलान	102-113
11	भौतिकवाद और मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) में सुख की अवधारणा : एक दार्शनिक तुलनात्मक अध्ययन सुनील छानवाल	114-123
12	मध्यस्थ दर्शन की दृष्टि में मानव-प्रकृति संबंध और पर्यावरणीय संतुलन सुनील गुप्ता	124-132

संपादकीय

आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत समाजोत्थान, शिक्षावर्धन, शोध एवं मानव जीवन से जुड़े मूल्यों के संरक्षण हेतु निरंतर प्रयासरत है। संस्था द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाली शोध कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमिनार और संगोष्ठियाँ इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाती हैं। इसी क्रम में आशा पारस बहुविषयक भारतीय शोध पत्रिका का प्रवेशांक “मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद” विषय पर केंद्रित किया गया है, जो आचार्य श्री ए. नागराज द्वारा प्रतिपादित दर्शन की प्रासंगिकता और उसके व्यावहारिक आयामों पर प्रकाश डालती है।

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल के महिला अध्ययन विभाग के शुरुआती वर्ष में शोध परियोजना- “स्त्री एक मानव” पर कार्य करने का निर्णय लिया ताकि स्त्री के मानवी स्वरूप की शोध परक पड़ताल की जा सके। परियोजना समन्वयक के रूप में विधिवत नियुक्त हुई श्रीमती सुनीता पाठक और में परियोजना निदेशक की भूमिका में थी। चूंकि शोधार्थी प्रत्येक प्रकार के पूर्वाग्रह से दूर रहकर ही शोध परक तथ्यों का संकलन कर सकता है, अतः यह पड़ताल मुझे और श्रीमती सुनीता पाठक को अमर कंटक तक ले गई जहां पूज्य बाबा श्री नागराज से प्रत्यक्ष दार्शनिक चिंतन-मनन करने का लंबा अवसर प्राप्त हुआ और मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद के संदर्भ में स्त्री के लिए प्रतिपादित मानवी स्वरूप की पड़ताल इस दर्शन के माध्यम से पूरी हुई। इस विषय पर कई बार बाबा नागराज जी से वैचारिक विमर्श करने का दैवीय संयोग प्राप्त होता रहा जो इस दर्शन के प्रति मेरी वैचारिक उत्सुकता बढ़ाता रहा। शोध पत्रिका के प्रवेशांक को मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के विविध विचारों पर शोध-परक दृष्टि से लाने की पृष्ठभूमि में यही सोच बलवती रही है। बहुत सोच विचारकर इस अंक का सम्पादन करने का दायित्व मध्यस्थ दर्शन के अध्येता डॉ. सुरेन्द्र पाठक को सौंपने का निर्णय किया जिसे डॉ. सुरेन्द्र पाठक ने बड़ी विनम्रता और सहजता से स्वीकारा और समय-सीमा में निष्ठा पूर्वक कार्य दायित्व का निर्वहन भी किया।

आज का समाज व्यक्तिगत, पारिवारिक और वैश्विक स्तर पर असंख्य चुनौतियों से जूझ रहा है। व्यक्तिगत स्तर पर अशांति और मानसिक तनाव, पारिवारिक संबंधों में विघटन और वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय एवं सामाजिक असंतुलन – इन सभी ने मानवीय जीवन को संकटग्रस्त बना दिया है। ऐसे समय में मध्यस्थ दर्शन एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो समस्याओं के मूल कारण को समझने और उनके समाधान की व्यावहारिक दिशा प्रदान करने में सक्षम है।

इस अंक में संकलित शोध-पत्र इसी दृष्टि को पुष्ट करते हैं। शिक्षा क्षेत्र में अर्पिता शर्मा, सोनिका एवं डॉ. सुरेन्द्र पाठक के लेख यह स्पष्ट करते हैं कि मध्यस्थ दर्शन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षा को केवल सूचना का आदान-प्रदान न मानकर मानवीय चेतना के विकास का साधन बनाता है और सह-अस्तित्ववादी शिक्षा जीवन को सही दिशा में मार्गदर्शित करती है। परिवार और समाज के संदर्भ में बंसी चंदराना, देव प्रकाश शर्मा, गौरीकान्ता साहू और सुरेन्द्र जगलान के शोध-पत्र यह स्पष्ट करते हैं कि परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और सामुदायिक नैतिकता की स्थापना समाज को अधिक सुदृढ़ और संतुलित बना सकती है। विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में डॉ. अंजली अवधिया का लेख डार्विन के संघर्ष-आधारित विकासवाद से आगे बढ़ते हुए सह-अस्तित्ववादी विकास सिद्धांत को प्रस्तुत करता है, जबकि जनक जे. शाह का चिंतन “समरस जीवन” की अवधारणा को आधुनिक युग की चुनौतियों के बीच

व्यावहारिक समाधान के रूप में सामने रखता है। मध्यस्थ दर्शन के परिप्रेक्ष्य में भौतिकवादी सोच का विश्लेषण डॉ. सुनील छानवाल का आलेख प्रस्तुत करता है।

इसी क्रम में, सुनील गुप्ता का शोध “मानव-प्रकृति संबंध और पर्यावरणीय संतुलन” यह दर्शाता है कि सह-अस्तित्ववादी दृष्टि अपनाकर ही जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकटों का समाधान संभव है। अर्चना सेंगर का लेख “कोशिका में व्यवस्थित क्रियात्मकता और संतुलन” यह प्रमाणित करता है कि जीवन की सबसे छोटी इकाई कोशिका भी स्व-नियंत्रित और अनुशासित व्यवस्था के माध्यम से सह-अस्तित्व की पूरकता का निर्वहन करती है। वहीं डॉ. साधन भट्टाचार्य का शोध “जीवन और मेधस-शरीर का संबंध” यह स्पष्ट करता है कि जीवन एक चैतन्य इकाई है और मेधस उसका उपकरण। चेतना की प्रगति व्यक्तिगत और सामाजिक विकास दोनों के लिए आधारभूत है।

इन सभी शोध-पत्रों का साझा संदेश यही है कि मध्यस्थ दर्शन केवल एक दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि जीवन जीने का व्यावहारिक मार्ग भी है। यह शिक्षा, परिवार, समाज, विज्ञान, प्रकृति और चेतना – सभी क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापित कर सह-अस्तित्व पर आधारित एक स्वस्थ, सुखी और समरस समाज की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

हम आशा करते हैं कि यह विशेषांक ज्ञान के नए क्षितिज खोलेगा, शोधकर्ताओं को प्रेरित करेगा और भविष्य की पीढ़ियों के लिए सह-अस्तित्ववादी जीवन-दृष्टि का आधार बनेगा।

समस्त संपादकीय टीम का साधुवाद ।

प्रो. आशा शुक्ला
(प्रधान संपादक)